Jayatu Jayatu Me Bharatadesha

जयतु जयतु मे भारतदेश

Document Information

Text title : Jayatu Jayatu Me Bharatadesha

File name : jayatujayatumebhAratadesha.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 17, 2022

sanskritdocuments.org

Jayatu Jayatu Me Bharatadesha

जयतु जयतु मे भारतदेश

(गीतिका)

जयतु जयतु मे भारतदेश
जयतु गुणाब्धित-गौरव-वेश ।
वीर-प्रसू सुषमाढ्य- मनोज्ञ,
वीर वृन्द-परिपालित-देश ॥ जयतु०॥ १

शस्य-श्यामलो नव-रस-पूर्ण,
खग-रव-शोभित-द्रुम-दल-पूर्णम् ।
नाना-नद-सरिता रवतूर्ण
सुखद-मुदागति-गति-रय-पूर्णम् ॥ जयतु०॥ २

हिमगिरि-शोभित-मन्जु किरीट
विन्ध्य-मेखला-मणिमय-मध्य ।
सागर-पूजित-पद-युग-रम्य
शान्ति-सुधा-रस-गौरव-हृद्य ॥ जयतु ॥ ३

विश्ववन्द्य-कविवृन्द-समिद्धः
ज्ञान-दीप्ति-श्रित-भूति-समृद्धः ।
तत्त्वज्ञान-गरिमाञ्चित शुद्धः
शौर्य-धैर्य-बल-बुद्धि-प्रबुद्धः ॥ जयतु०॥ ४

मति-रति-भक्ति-विरक्ति गुणाढय,
कृति-तति शक्ति-समन्वित-काय ।
ज्ञान-भानु-कर हृत-मल-शुद्ध
ऋद्धि-सिद्धि-सुषमा-सुसमृद्ध ॥ जयतु०॥ ५

सर्वकाल-सुषमा-परमाढय,
कुसुम-समृद्धि-समेधित-शोभ ।
शाद्वल-शोभित-सुरभित-क्षेत्र,

ज्ञान-भक्ति-कृति-रम्य-त्रिनेत्र ॥ जयतु ॥ ६

कालिदास-कपिलादि-प्रसिद्ध,
माघ-हर्ष-भवभूति-समृद्ध ।
गौतम-जैमिनि-दर्शन-सिद्ध,
उमा-रमा-गुण-गौरव-शुद्ध ॥ जयतु०॥ ७

ज्ञानामृत-परितोषित-लोक,
तत्त्वज्ञान-परिशोषित-शोक ।
शान्ति-सुधा-रस-हृत-कलि-पाप,
कर्मयोग-हृत-मानस-ताप ॥ जयतु०॥ ८

गाङ्गि-सुभाष-गुणावलि वन्द्य,
कवि-अरविन्द्-रवीन्द्र-सुनन्द्य ।
भक्तसिंह-तिलकाञ्चित-भाल
स्वामि-दयानन्दार्चित-पाद ॥ जयतु०॥ ९

शान्ति-क्रान्ति-समवाय-समिद्ध
शक्ति-भक्ति-नय-सिद्धि-समृद्ध ।
निखिल-विश्व-सुख शान्ति-प्रणुन्न,
भवतु भवे गुण-कीर्ति-प्रसिद्ध ॥ जयतु०॥ १०

Proofread by Mandar Mali

Jayatu Jayatu Me Bharatadesha
pdf was typeset on December 17, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*